प्राक्कथन

किसी राष्ट्र की भौगोलिक सीमा उसकी परिचायक नहीं होती, अपितु उसकी ऐतिहासिक स्थिति ही उसके गौरव का व्याख्यान करती है। बिना इतिहास को जाने किसी राष्ट्र को जान पाना संभव नहीं है और यही उसकी संस्कृति को जानने व समझने का आधार है। संस्कृति रुपी पेड़ की जड़े इतिहास की नींव में समाहित होती हैं और संस्कारों का जल उसे अभिसिंचित व दृढ़ बनाता है। इसी संस्कृति रुपी पेड़ पर जब अन्य संस्कारों की छाया पड़ने लगती है, तो वह अपने मूल से खंडित होने लगता है। वर्तमान परिपेक्ष्य में हो रहे भारतीय संगीत संस्कृति के पाश्चिमीकरण ने भारतीय संस्कृति पर प्रभाव डाला है। इसी कारण यह आवश्यक हो जाता है, कि अपने वैदिक साहित्य, वेदों आदि का अध्ययन किया जाए, क्योंकि यह वेद, पुराण ही भारतीय संस्कृति का आधार है।

चतुवर्णये त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमः पृथक।।
भुतं भंय भविष्य च सर्व वेदात प्रसिध्यति।।[(1)]

मानव जीवन में वेदों का सर्वोपरि स्थान है, क्योंकि जीवन के प्रत्येक पहलू का दर्शन वेदों में दर्शनीय है। भूत, भविष्य, वर्तमान चारों आश्रम, वर्ण तथा तीनों लोकों का सार वेदों में निहित है। इस धरती पर जितने देश हैं, उतनी ही संस्कृतियाँ हैं और सभी देश अपनी–अपनी अनूठी और उत्कृष्ट संस्कृति से पोषित हैं, परंतु भारत की संस्कृति सौभाग्य से दैवीय परंपरा की पावन भूमि है, जो सम्पूर्ण विश्व में सर्वमान्य सर्वोपरि है तथा भारत की इस गौरवशाली संस्कृति को समृद्ध बनाने में कला, संगीत, साहित्य, दर्शन का मुख्य योगदान है। गायन, वादन तथा नृत्य के त्रय संयोग को संगीत कहा जाता है, जिसका उद्भव हजारों वर्ष पहले इस तपोभूमि के पवित्र आवरण में वेदों ऋचाओं के गान द्वारा हुआ। वेदों में संगीत का वर्णन अति प्राचीन है, इसका वर्णन सबसे पहले ऋग्वेद में हुआ है, सम्पूर्ण सामवेद संगीतमय है। सामवेद के रूप में संगीत का तत्सम रूप था। अनुमान है कि तीसरी से पांचवी शताब्दी के मध्य नाट्यशास्त्र की रचना भरत मुनि द्वारा की गई, जो वैदिक संगीत पर ही आधारित था। भरत मुनि द्वारा सामवेद के संगीत का वर्णन किया गया तथा उसका आश्रय प्राप्त कर, भरत मुनि द्वारा संगीत के तथ्यों तथा उनके विधानों को लिपिबद्ध किया गया। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि इस ग्रंथ को रचने का उद्देश्य यह था कि जो कलिष्ठ ज्ञान तथ्य वेदों में

(1) मनु / मनुस्मृति / अध्याय–12 / श्लोक–99

वर्णित है उनका सरल तथा स्पष्ट रूप में वर्णन कर वेदों की गंभीरता तथा जीवन में वेदों की महत्वता को समझाने का प्रयास किया है, क्योंकि प्राचीन काल में वेदों को पढ़ने या उनका पाठन करने का अधिकार कुछ ही लोगों को प्राप्त था। इस कारण भरत मुनि द्वारा समस्त ज्ञान को संग्रहित कर अपने ग्रन्थ में समाहित किया गया और भरत मुनि ने नाट्य के द्वारा वैदिक नियमों और सिद्धांतों को प्रयुक्त करने का निर्णय लिया। नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय के बाहरवें में श्लोक में इस तथ्य को स्पष्ट किया गया है।

न वेदव्यवहारोंऽयं संश्राव्य शूद्रजातिषु।
तस्मात सृजापंद वेंद ग्रन्थम् सार्ववणिकम्।।[(1)]

इसलिए नाट्यशास्त्र को पंचम वेद की संज्ञा दी गई है तथा इसकी रचना हेतु चारों वेदों को ग्रहण किया गया है, जिसमें ऋग्वेद से पाठ, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस को लिए गया है।

अग्राह पाठ्यमृग्वेदात् समान्यों गीतमेव च।।
यजुर्वेदादभिनयं रसानार्थवणादपि।।[(2)]

नाट्यशास्त्र को नाट्य के मुख्य सिद्धांतों के रूप को स्वीकार किया जाता है तथा इसे सभी ललित कलाओं का कोष कहा गया है। ललित कलाओं यह विश्वकोश भरत मुनि के उदार कला मनोवृत्ति को प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोधकार्य का विषय **"नाट्यशास्त्र में वर्णित ताल की वर्तमान उपयोगिता एवं संभावनाएं"** हैं तथा विषय को ध्यान में रखते हुए ताल शास्त्र के विषय को उजागर तथा उसकी वर्तमान उपयोगिता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है नाट्यशास्त्र में वर्णित समस्त अध्यायों में ताल पक्ष का जहां–जहां भी वर्णन प्राप्त होता है उसे इस शोध कार्य के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है।

****

(आकाशमान)

---

(1)शुक्ल शास्त्री,बाबूलाल (अनुवाद)/भरत/नाट्यशास्त्र/अध्याय–1/श्लोक–12
(2) शुक्ल शास्त्री,बाबूलाल (अनुवाद)/भरत/नाट्यशास्त्र/अध्याय–1/श्लोक–15